

पुणीया श्रावक - Puniyo Shravak

## पुणीया श्रावक

एक बार श्रेणीक राजा तगर के बाहर उद्यात में बिराजित भगवात श्री महावीर के दर्शन करने जाते है। परमात्मा श्री महावीर को वंदन कर विनय पूर्वक उनके समक्ष अपना स्थान ग्रहण करते है। श्रेणीक राजा भगवान महावीर को अपने अंदर उठ रहे प्रश्न का उत्तर पूछते है। राजा श्रेणीक :- भंते! मृत्यु के बाद मेरी कौनसी गति होगी?

परमात्मा महावीरः- पूर्व में पंचेन्द्रिय जीव की हिंसा के पाप के कारण तुम्हारा तरक गति में आयुष्य का बंध हुआ है।

Once king Shrenik asked Tirthankar Bhagwan Mahavir about the state of his soul after death, where would it go?

Mahavir swami replied : "You will go to hell on account of your past birth's violent deeds."

केवल ज्ञाज प्राप्त होजे के बाद परमात्मा को सबकुछ ज्ञात होता है। The Omniscient Lord knows the past, present and future of every living being.

राजा श्रेणीक :- भंते! मुजे अपने पापो से मुक्त होना है। क्या यह संभव है?

परमात्मा महावीर :- जगर में पुणीया श्रावक रहता है, जिसकी सामायिक की साधना सर्वश्रेष्ठ है। सामायिक करने से अनंत कर्मो का क्षय होता है। यदि तुम पुणीया श्रावक की एक उत्कृष्ठ सामायिक का फल ला सको तो ले आओ।

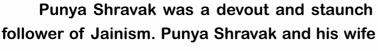
The king wanted to know what he should do to avoid such a fate.

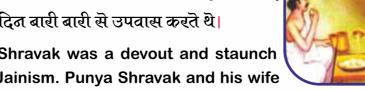
Mahavir Swami replied : "In this city lives a pious" man named Punya who is known for his practice of



Samayik. Practicing Samayik deletes countless bad karmas. You can avoid going to hell provided you get the punya (good deeds) acquiring from one samayik of Punya Shravak."

पुणीचा श्रावक धर्म के प्रति अत्यंत श्रद्धावान थे और १२ व्रत के धारक थे। पति-पत्नी सुरव और संतोष से रहते थे। रुई कांतकर अपना गुजारा चलाते थे। साधर्मिक भक्ति (किसी साधर्मिक को खाता खितलाता) के लिए दोतों एक एक दित बारी बारी से उपवास करते थे।





were poor villagers by their own choice and yet were

very happy. He earned his living by spinning cotton yarn in the house and selling it. They also had another vow to offer food to a Sadharmik (helping deserving people). As they could not afford this, he would fast one day and his wife would fast on the next day. Even during such difficult situations, they always offered their hospitality to fellow beings. In this way, the couple did Sadharmik Bhakti every day.

श्रेणीक राजा भगवान का कथन सुन पुणीया श्रावक के पास उसके घर आते है। King Shrenik comes to Punya Shravak's place.

:- क्या तुम मुजे तुम्हारी १ सामाचिक का फल दे सकते हो? बदले में मैं तुम्हें श्रेणीक राजा राजगृह तगरी और सोता महोरे दंगाँ।

पुणीया श्रावक :- क्षमा करे राजत! मैं सामामिक कुछ पाते के लिए तहीं करता मगर मेरे आत्मा के कल्याण के लिए करता हूं। धर्म की क्रिया का फल बेचा तहीं जा सकता, किसीको दिया तहीं जा सकता। कर्मी का क्षय करते के लिए खुद साधता को करती होती है।

The king approached Punya Shravak with the request, "will you give me the result of your samayik. In return ask whatever you want, your wish will be granted."



Punya Shravak : " Please forgive me, O King! I do not practice samayik to gain anything for myelf. I practice it to eradicate this divine soul from the shackles of karmas. You will have to bind your own good deeds. No one can sell the fruits of their good deeds. I too cannot, even if you pay me piles of money. "

श्रेणीक राजा सत्य की समज पा कर भगवाज के पास आते है और उन्हें सारी हकीकत बताते है।

Shrenik realized that his entire wealth would not be able to buy even one samayik of Punya Shravak. He felt the highest reverence for his devotion. He went to Bhagwan Mahavir.

भगवान महावीर :- वत्स! सामाचिक की तुलना धन, नगर से नहीं की जा सकती है। सामाचिक के फल की लेन देन नहीं हो सकती है। अपने कर्मो का फल स्वयं ही भुगतना पड़ता है। कर्मो का क्षय स्वयं ही करना पड़ता है।

## Bhagwan Mahavir explained it differently.

He said : A Samayik cannot be compared with piles of gold or money. A living being undergoes the suffering or pleasures according to their merits and demerits. We ourselves have to get free from bondage of these Karmas.

सिख (Moral) निकाचित कर्मो (अवश्य भुगतने पडे वैसे कर्म) का फल भुगतना ही पड़ता है। अन्य कोई हमारी मदद नहीं कर सकता। साल भर रोज सुवर्ण दान दे फिर भी सामायिक का मुल्य नहीं हो सकता।

Scriptures say that if one donates gold everyday and the other performs Samayik, the one who donates gold cannot stand in comparison to the one who performs samayik.